

॥ अग्निवास विचार ॥

तिथि प्रहर संयुक्ता तारकावार मिश्रिता ।
अग्निभिश्च हरेद्भागम् शेषे सत्वरजस्तमा ॥
सत्वे तात्कालिकी सिद्धी रजसा तु बिलंबकम् ।
तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्न कोविदै ॥

● मनोकामना पूर्ति अनुष्ठान में अग्निवास देखना अत्यंत आवश्यक है

किसी भी ग्रह दोषों के निवारण हेतु जो कर्म किया जाता है अथवा देव-प्रतिष्ठा, गृह-प्रवेश, यज्ञोपवीत जैसे सभी कर्मों में ये अनिवार्य होता है, की अग्निवास देखकर ही यज्ञ (हवन) किया जाय अन्यथा कर्म निष्फल होता है ॥

● हवनादि के समय अग्निवास देखना

- शास्त्रीय विधान के अनुसार वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल-पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए तदुपरांत गृह के 'मुख-आहुति-चक्र' का विचार करना चाहिए ।
- मान लो आज हम कृष्ण पक्ष की चौथी तिथि में चल रहे हैं तो । शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा तक 15 तिथि तो कुल योग आया $15 + 4 = 19 + 1 = 20$
- आज कौन सा दिन हैं और इस दिन को रविवार से गिने । मानलो आज बुधवार हैं तो रविवार से गिनने पर बुधवार 4 आया । कुल योग $20 + 4 = 24/4$ से भाग कर दे तो शेष 0 बचा ।

- | | |
|--------------------------------------------|-------------------------|
| ■ शेष 0 तो अग्नि का निवास पृथ्वी पर माने । | कल्याणकारक होता है । |
| ■ शेष 1 तो अग्नि का निवास आकाश मे । | आयु का क्षय होता है । |
| ■ शेष 2 तो अग्नि का निवास पाताल मे । | धन का नुक्सान होता है । |
| ■ शेष 3 बचे तो पृथ्वी पर माने । | कल्याणकारक होता है । |

॥ अग्निवास चक्र ॥

तिथि		वार						
शुक्ल	कृष्ण	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी	
2	3	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी		
3	4			पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी
4	5		पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी
5	6	पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी	
6	7	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी		
7	8			पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी
8	9		पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी
9	10	पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी	
10	11	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी		
11	12			पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी
12	13		पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी
13	14	पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी	
14	30	पृथ्वी			पृथ्वी	पृथ्वी		
15	1			पृथ्वी	पृथ्वी			पृथ्वी